कर्पूरी ठाकुरः जन से नायक तक, लेखक–कुमार अमरेन्द्र, प्रकाशक–जागृति साहित्य प्रकाशन, पटना–800006, प्रथम संस्करण, 2011

समीक्षक मायानन्द

प्रस्तुत पुस्तक जननायक कर्पूरी ठाकुर का जीवन चरित है। आठ अध्यायों में विभाजित करके लेखक ने इस चरित लेखन में दुर्लभ सूचनाओं से ओत–प्रोत सामग्री संग्रहीत की है। लेखक ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि जननायक कर्पूरी ठाकुर का जीवन–चरित् सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, धर्म निरपेक्षता जैसे मानव मूल्यों के संघर्ष–पथ पर बिहार की जन्म भूमि को गौरव प्रदान करने के लिए बीसवीं सदी का बुद्ध चरित ही है। ईसा पूर्व पॉचवी सदी में भगवान बुद्ध ने कर्मकाण्ड, ब्राह्मणवाद, जाति–प्रथा पर आधारित शोषण के खिलाफ जेहाद छेड़ा था और जीवन–पर्यनत विश्रामहीन क्षणों की छाया में अपने को उत्सर्ग कर दिया था। तत्कालीन सामाजिक सुधारों के लिए उन्होंने एक ऐसी विधा का आश्रय लिया जो सम्पूर्ण समाजशास्त्र का स्वरूप था। बिहार की धरती पर जननायक कर्पूरी ठाकुर ने इन आदर्शों को साकार रूप प्रदान करने के लिए अविराम गति से चलते–चलते संघर्ष के पथ पर शूलों और कांटों की चिंता से दूर अपने जीवन की आहूति दे ही।